काया पलट

[रात का दृश्य । कुत्तों के भौंकने की कभी-कभी आवाज ; कभी-कभी पहरेदार का नारा 'जागते रहो' ; घड़ी की टिक-टिक । हल्के खर्राटे के बाद एक मर्द की आवाज ।]

पुरुष—क्या मतलब ? यानी अब मैं घर की चहारदीवारी में बैठूँ ? बच्चों की निगरानी करूँ ? सीना-पिरोना देखूँ ?

स्त्री—क्यों आख़िर इसमें ताज्जुब की क्या बात है ? इस कायापलट से पहले भी सब कुछ औरतों ने किया । घरों की चहारदीवारी में रही हैं ; बच्चों की हमेशा निगरानी की है ; सीना-पिरोना देखा है । क्या अब भी तमाम फ़राइज मर्दों के न होंगे ?

पुरुष—और दफ़्तर का क्या होगा ? तुमको मालूम है आज मुआयना होने वाला है ।

स्त्री—आहिस्ता बोलो, बाहर तमाम ग़ैर औरतें बैठी हैं । दफ़्तर मैं जा रही हूँ । मुआयने के लिए अब बजाय साहब के मेम साहब आयेंगी और जिस तरह दफ़्तर में पहले कोई औरत दिखाई न देती थी वैसे ही आज कोई मर्द नजर न आयेगा । अच्छा देखो तुम मेरा दुपट्टा चुनकर रखना, मैं दफ़्तर से आकर जरा पिक्चर में जाऊँगी ।

पुरुष—यह तो अजीब मुसीबत है । मैं भला दुपट्टा क्योंकर चुनूँगा ?

स्त्री—जरा सा दुपट्टा चुनना नहीं आता ? ये ढंग हैं तो चला चुके तुम घर । मैंने हमेशा तमाम मर्दाने कपड़ों पर इस्तरी की है । याद करो वह जमाना । मैं यह कुछ नहीं जानती कि दुपट्टा चुनना आता है या नहीं । मुझको दफ़्तर से वापसी पर दुपट्टा चुना-चुनाया मिले । अच्छा मैं ग़ुसलखाने जा रही हूँ तुम मेरी कंघी-चोटी का सामान ठीक से रखवाओ, दफ़्तर को देर न हो जाय ।

[जाती है ।]

पुरुष—[आवाज देकर] क्वाय ! क्वाय ! आया ! आया !

ब्वाय—[दूर से] आता हूँ सरकार। [समीप आकर] हुजूर आया को मेमसाहब ने हुक्म दिया है कि वह बाहर ही रहे। घर में उसका कोई काम नहीं।

पुरुष—अच्छा खैर। देखो मेम साहब की सिंगार-मेज ठीक कर दो। दफ़्तर जा रही है, देर न होने पाये।

ब्वाय—[ताज्जुब से] दफ़्तर जा रही है? और सरकार न जायेंगे दफ़्तर?

पुरुष—नहीं, आज से मेम साहब ही जाया करेंगी। तुम जाओ सिंगार-मेज ठीक करो और देखो सब चीजें ठीक से रख देना पावडर, लिपस्टिक, नेल पालिश कोई चीज़ भूल न जाना।

[मेम साहब आती हैं।]

मेम साहब—ओहो दस बजने में दस मिनट रह गये। किधर गया ब्वाय? जब तक तुम ही उठकर जल्दी से मेरा जूड़ा बाँध दो। मैं जब तक क्रीम लगा लूँ। ब्वाय चलो उधर वह आसमानी रंग की बनारसी साड़ी निकालो जो यह नुमायश से लाये थे। चलो, जल्दी करो।

पुरुष—अब वापसी कब तक होगी?

स्त्री—मेरे बाहर जाने के वक्त इस क़िस्म के मोहमल सवाल मत किया करो। मैं इन बातों को पसन्द नहीं करती। छोड़ो, तुमसे ज़रा-सा जूड़ा तक न बँध सका। अच्छा मेरा पानदान ठीक करके मोटर पर रखवाओ। बहुत देर हो गई है।

पुरुष—अब इस पाउडर वग़ैरा में और भी देर होगी।

स्त्री—बावजूद देर हो जाने के तुम कभी बग़ैर शेव किये बाहर नहीं निकले। लाओ वह क्लिप लाओ और वह ब्रश उठाओ। यह नहीं, वह। किस क़दर बेवक़ूफ़ होते हैं ये मर्द भी। ब्वाय, चलो आईना दिखाओ।

ब्वाय—सरकार, यह साड़ी कहाँ थी आपने?

स्त्री—हाँ, ठीक है, उठाओ, आईना उठाओ। हाँ यों, बस ठीक है। मैंने कहा सुनते हो तुम, लपककर ज़रा सेण्ट की शीशी तो उठा लाओ। देखो ब्वाय, माँग ठीक है ?

[पुरुष जाता है।]

ब्वाय—हुज़ूर, इधर ज़रा तिरछी है।

स्त्री—आईना ठीक से रखो। हाँ, यों। अच्छा देखो अब ठीक है ?

[पुरुष आता है।]

पुरुष—यह सेण्ट की शीशी मँगाई थी ना ?

स्त्री—और सुनो, आज शायद जमीला के घर में से किसी वक्त आयें। उनकी ख़ातिरमदारात ज़रा अच्छी तरह कर देना। कोई शिकायत का मौक़ा न आने पाये।

पुरुष—कौन ? मसूद आयेंगे ? वह तो आया ही करते हैं, आज नई बात कौनसी होगी ?

स्त्री—मेरा मतलब यह है कि तुम ख़ुद उनको डोली से उतरवाना। वह शायद उसी वक्त आयेंगे दस-ग्यारह बजे। जमीला ने कहा था कि उनको भेज देंगी।

[बाहर से आवाज़ आती है 'सवारी उतरवालो'।]

पुरुष—यह तो सचमुच किसी की डोली आ गई।

स्त्री—वही होंगे जमीला के घर में से। मैं बाहर जाती हूँ, तुम उनको उतरवाने जाओ ना।

पुरुष—तो क्या तुम बाहर ही से दफ़्तर चली जाओगी ? मैं चाहता था मिलती हुई जातीं। मुझे बाज़ार से कुछ मँगाना था : शेविंग स्टिक, ब्लेड्स वग़ैरा।

स्त्री—वह सब ब्वाय से कहलवा देना। आया ले आयेगी। मगर अब तुम उन बेचारे को तो उतरवाओ। डोली में बैठे घुट रहे होंगे।

पुरुष—अच्छा तुम तो जाओ, मैं जा रहा हूँ उनको उतरवाने।

[पुरुष जाता है; थोड़ी दूर जाकर फिर लौटते हुए] आते क्यों नहीं हो मसूद ? आओ चले आओ, घर में कोई नहीं है। यह क्या इस गर्मी में चादर लपेटे हुए हो ? उतारो अब इसे।

मसूद—भाभी तो घर में नहीं हैं ?

पुरुष—नहीं है। वह तो तुम्हारे आने की ख़बर सुनकर बाहर जनाने बैठक में चली गई हैं।

मसूद—जाकर मेरा सलाम तो कहलवादो।

[टेलिफ़ोन की घंटी बजती है।]

पुरुष—ब्वाय, ज़रा देखना टेलिफ़ोन।] [ब्वाय लपकता है।]

ब्वाय—हलो।······ जी हाँ डिप्टाइन साहब के यहाँ से बोल रहा हूँ। अभी नहीं गईं दफ़्तर।······जी ? जी हाँ, बाहर जनाना बैठक में हैं।······जी······जी······जी। बहुत अच्छा। अभी बुलवाता हूँ, ठहर जाइये।

पुरुष—कौन है ?

ब्वाय—दफ़्तर से कोई बबुआइन टेलिफ़ोन कर रही हैं। कहती है कि मेम साहब को फ़ोन पर बुला दो। वह जो मुआयना करने आज आने वाली थीं उन्होंने कहलवाया है कि मैंने भूले से मेंहदी लगाली है इसलिए आज न आऊँगी।

पुरुष—तो जाओ, लपककर मेम साहब से कहलवादो।

ब्वाय—जी नहीं। मसूद मियाँ को दूसरे कमरे में भेज दीजिए। वह तो टेलिफ़ोन पर मेम साहब ही को बुला रही हैं। कुछ और बातें कहना हैं।

पुरुष—जाओ तो बुलवाना उनको। आओ मसूद, तुम इधर कमरे में आ जाओ। [कुछ क़दमों की आवाज़]

मसूद—भाभी आयें तो मेरा सलाम ज़रूर कह देना।

पुरुष—तुम .खुद ही न कह देना। क्या तुम्हारे मुँह में ज़बान नहीं है ?

मसूद—भई हमें तो शर्म आती है। वह बनाना शुरू कर देंगी।

[मेम साहब की आवाज आती है।]

मेम साहब—मैं आजाऊँ अन्दर ?

पुरुष—आती क्यों नहीं हो। यह मसूद तुम्हें सलाम कर रहे हैं।

मेम साहब—मेरा भी सलाम कह दो और मिज़ाज पूछ दो। मैं जरा टेलिफ़ोन सुन लूँ। हलो······हाँ हाँ।······मेंहदी लगाई है? ······अच्छा।······हूँ।······हूँ, हूँ······तो फिर मैं क्या करूँगी आज आकर? डाक यहीं भेज दो किसी चपरासिन के हाथ।······ हाँ······हाँ······दस्तख़त के लिए काग़ज भी।······ठीक है?······ अच्छा।

[टेलिफ़ोन रख देती है।]

पुरुष—तो अब तुम दफ़्तर नहीं जा रही हो ?

मेम साहब—बड़ी ख़ुशी हुई होगी आपको? इनसे जरा पूछो तो अपने दोस्त से कि आज जमीला क्या कर रही हैं ?

पुरुष—सुना तुमने मसूद, क्या कह रही हैं यह? एँ? तो तुम ख़ुद क्यों नहीं बोलते? यह इशारों में बातें करना मुझे नहीं आतीं।

मेम साहब—ओ नहीं तो क्या यह तुम्हारी तरह बारह हाथ की जबान निकालकर बंकारना शुरू कर दें ?

पुरुष—मसूद कह रहे हैं कि जिनको आप पूछ रही हैं उनकी ख़बर आप ही को ज्यादा हो सकती है। सवेरे से ग़ायब हैं घर से।

मेम साहब—बड़ी सैलानी है यह जमीला भी। घर से दफ़्तर का बहाना किया होगा और पहुँची होगी किसी सहेली के यहाँ गुड़ियाँ खेलने। अब तो माशा-अल्ला बाजी लगाकर गुड़ियाँ खेलने लगी है। इनसे पूछो कि आख़िर यह समझाते क्यों नहीं हैं ?

पुरुष—और क्या औरत जात को अगर घर में बैठने वाले मर्द समझा सकते तो दुनिया ही सुधर जाती? अपनी तो ख़बर लो, कभी

तुम्हारा दिल घर में लगता है ? दिन-रात तुम हो और तुम्हारी गुइयाँ हैं। आज हँडकुलिया पक रही है तो कल किसी बाग़ में झूला पड़ा है। घर में घुटने के लिए तो मर्द हैं।

मेम साहब—ओफ़ ओह ! सख़्त ग़ुस्सा आरहा है।

पुरुष—ग़ुस्सा न आये ? सिनेमा ले जाने का वादा किया वह तक तो तुमसे पूरा न हुआ।

मेम साहब—तुमने याद भी तो नहीं दिलाया। आज ही चलो दोपहर के शो में, तुमको सिनेमा दिखालाऊँ। अपने दोस्त से पूछो कि चलेंगे।

पुरुष—क्यों मसूद चलोगे ना ?

मसूद—[चुपके से] उनसे पूछा नहीं है।

मेम साहब—किससे ? जमीला से ? उनसे पूछने की ज़रूरत ही क्या है ? वह भी बेचारी इतनी मजाल रखती हैं कि मेरी बात में दख़ल दें ? मैं उनसे कह दूँगी। तुम दोनों तैयार हो जाओ। खाना-वाना जल्दी से हो जाय तो इसी वक़्त दिन के शो में हो आयें।

मसूद—[चुपके से] बच्चों को घर पर छोड़ आया हूँ।

मेम साहब—फिर कुछ भनभनाहट-सी कान में आई। यह आख़िर क्या कह रहे हैं ?

पुरुष—कह रहे हैं कि बच्चों को घर पर छोड़ कर आये हैं।

मेम साहब—अरे तो क्या हुआ ? एक दिन बाप न सही मा ही बच्चों की निगरानी कर लेगी तो क्या हर्ज है ?

ब्वाय—सरकार, आया कह रही है कि कप्तानी साहब आई हैं।

मेम साहब—कौन जमीला ? ख़ूब आई। देखो तो सही आज इस चुड़ैल की कैसी ख़बर लेती हूँ। मैंने कहा सुनते हो तुम, ज़रा उधर कमरे में चले जाओ तो यहीं बुलालूँ। और ज़रा पान भेजो अन्दर से। ब्वाय, जा बुलवाले। यह तू कहाँ चला छिपने को ? शामत तो नहीं

आई है ? बड़ा पर्दे वाला है। जाकर बुलवाले जमीला को, अन्दर ही।
[ब्वाय जाता है।]

पुरुष—मैंने कहा सुनती हो, उनको भी पकड़ के सिनेमा लेती चलो।

मेम साहब—तुम जरा तमाशा तो देखो। अच्छा अब अन्दर जाओ, वह आ रही हैं। आइये, आइये। क़दम-क़दम की ख़ैर। यह कहाँ थीं सरकार ?

जमीला—[आते हुए] अपनी हाय दूसरों पर गँवाये। अपनी होश की दवा कर औरत। तेरा ख़ुद पता नहीं चलता। पूछ जरा अपनी आया से कि कितनी मरतबा आ-आकर लौट चुकी हूँ। जब पूछा मालूम हुआ बेगम सोलह सिंगार करके कहीं गई हैं।

मेम साहब—ऐ सिंगार करे है मेरी जूती। सिंगार वह करे जिसे अल्लाह ने सूरत न दी हो।

जमीला—सदक़े जाऊँ इस सूरत के। मगर अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते तुम्हीं को देखा है। मालूम होता है हमारे भाई साहब ने तेरा दिमाग़ और भी ख़राब कर दिया है।

मेम साहब—ख़ैर मेरा दिमाग़ तो तुम्हारे भाई साहब ने किया है मगर तुम्हारा दिमाग़ किसने ख़राब किया है जो यह सिंदूर की बिन्दिया लगाये-लगाये फिरती हो चमकती हुई ? मैं पूछती हूँ आख़िर तुम थीं कहाँ ?

जमीला—चूल्हे-भाड़ में थी और कहाँ थी ? मेरा तो निगोड़ा काम ही ऐसा है कि दम लेने की फ़ुर्सत नहीं। दिन भर दफ़्तर में दस्तख़त करते-करते निगोड़ी उँगलियाँ शल होकर रह जाती हैं इस पर से तुर्रा यह कि इधर तहक़ीक़ात को जाओ उधर तफ़तीश को जाओ। कल ही देखो नो जो मैनेजर हैं ना रियासत दुपका के ऊँची जड़ाऊ चूड़ियाँ, कानों

के झुमके और चूलेदतियाँ न जाने कौन झाड़ू फिरी, मुई डकैत ले उड़ी है। सारी ख़ुदाई मैंने छान मारी मगर अब तक पता नहीं है।

मेम साहब—ज़रा-सी बेचारी को तफ़तीश जो करना पड़ी तो घबरा गईं। घबराना ही था तो कप्तानन्नी आख़िर बनी ही क्यों थीं ? किसी ने तुम्हारे हाथ जोड़े थे ?

जमीला—ऐ एड़ी-चोटी पर क़ुर्बान करूँ ऐसी मुई नौकरी। अपने तन-बदन का होश नहीं रहा है। कल की आधी चपाती खाये हुए हूँ। क़सम लेलो जो खील भी उड़कर मुंह तक गई हो।

मेम साहब—तो खाना मँगाती हूँ, मरी न जाओ।

जमीला—नहीं, मैं तो बात कहती हूँ। इस वक्त थकी-हारी घर पर जो पहुँची तो मालूम हुआ कि घर वाले साहब रंग-रापाने को गये हुए हैं। वर्दी भी नहीं उतारी यों ही चली आई।

मेम साहब—ब्वाय ! ब्वाय ! तोबा है इस निगोड़े का शर्म के मारे और भी बुरा हाल है। निकल अन्दर से और खाना लाकर लगा मेज़ पर। मगर जमीला तुमको इस वक्त पिक्चर में चलना है।

जमीला—कौन मैं ? मुझे भला कहाँ छुट्टी है। यहाँ से एकाध निवाला खाकर सीधी कोतवाली जाऊँगी, वहाँ सब थानेदारनियाँ इन्तज़ार कर रही होंगी।

मेम साहब—यह मैं कुछ नहीं जानती। तुमको आज तो चलना ही पड़ेगा। ऐ है, तुम्हारी ये चूड़ियाँ कैसी अच्छी हैं। कहाँ से मँगवाई ?

जमीला—ये चूड़ियाँ ? ये तो वर्दी की हैं इस वक्त सारे ज़ेवर पहने हूँ। [ब्वाय आता है।]

ब्वाय सरकार, वह मैंने कहा······[शर्मा जाता है।]

मेम साहब—चल दूर ! मुए की शर्म न हुई दीवानी हो गई। अब कह भी चुक क्या कह रहा था।

ब्वाय—खाना लगा दिया है।

जमीला—शर्माया तो ऐसा था कि मैं समझी कि अपने घर वाले का नाम ले रहा है।

मेम साहब—आओ जमीला, अब उठ भी चुको। मगर यह समझ लो कि तुमको पिक्चर चलना है चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

जमीला—कैसी बातें कर रही हो? इस वर्दी में कसी हुई भला सिनेमा कैसे जा सकती हूँ? तुम उनको ले जाओ शौक़ से वह देख आयें।

मेम साहब—वह तो जा ही रहे हैं मगर तुमको भी चलना होगा। अल्लाह मेरी जमीला बड़ी अच्छी बिटिया है। अच्छा ख़ैर चलो पहले खाना तो खालो। [दोनों उठकर जाती हैं। कुछ बर्तनों की खड़खड़]

जमीला—अल्लाह रे तेरे तकल्लुफ़! मैं आदमी न हुई अल्लाह रे क्या देव हो गई कि इतना सामान मेरे लिए है।

मेम साहब—तुम यह लो यह तुम्हारे भाई साहब ने अपने हाथ से ख़ास तौर पर पकाया है। वाह री औरत ला इधर प्लेट।

जमीला—ना बहन बस मैं इससे ज्यादा न लूँगी।

मेम साहब—अच्छा ज़रा-सी शीरमाल और सही, लो तो सही।

जमीला—ऐ, है, तो क्या मैं जान दे दूँ खाकर? मुई आधी चपाती की तो ख़ुराक। मेरा तो इतने खाने देखकर ही पेट निगोड़ा मारा भर गया।

मेम साहब—ज्वाय ज़रा पूछना इनके घर में कि यह घर पर भी यों ही तकल्लुफ़ करती हैं।

जमीला—वह बेचारे क्या बतायेंगे, मगर अल्लाह जानता है पेट भर गया।

मेम साहब—तो तुमने खाया ही बेकार, सूँघ लेतीं। यह पुलिस की नौकरी और यह चरकौवों की-सी ख़ुराक!

जमीला—और तुम्हारी .खुराक कौनसी हाथियों की-सी है ? ठूग रही थीं बैठी हुई तुम भी ।

मेम साहब—ओफ़ ओह ! बारह बजने में दस मिनट रह गये, अब जल्दी करो। देखो ब्वाय अन्दर मर्दाने में खाना हो गया हो तो कहो कि चलने को तैयार हो जायें और उससे रहीमन से कहो कि मोटर लगाये ।

जमीला—मुझे इस वक्त न ले जातीं तो अच्छा था। मैं सच कहती हूँ बहुत काम पड़ा हुआ है ।

मेम साहब—अच्छा अब इस बारह हाथ की लल्लो को क़ाबू में रखो, एक बात नहीं चाहती, समझीं कि नहीं ! मैं कब तुमसे कहा करती हूँ चलने को ?

जमीला—फिर किसी दिन सही, मगर आज तो तुम्हारी क़सम इतना काम है कि मैं क्या कहूँ ?

[ब्वाय आता है ।]

ब्वाय—सरकार मोटर लगा दिया गया है और अन्दर दोनों साहब तैयार हैं ।

मेम साहब—तैयार हैं तो बुलाओ ना हम दोनों भी तैयार ही हैं ।

[ब्वाय जाता है ।]

जमीला—फिर वही तुमने कहा हम दोनों ? मुझे आज न ले जाओ । कहना सुना करो, हमेशा की जिद्दन हो तुम ।

मेम साहब—अच्छा न जाओ । मैं भी नहीं जाती । चूल्हे में जाय मुआँ सिनेमा और आग लगे पिक्चर को । मैं तो पहले ही जानती थी कि तुम हजारों नख़रे करोगी । आज तक कभी तुमने मेरी बात मानी होती तो आज भी मानतीं । नोज बीवी कान पकड़े अब जो तुम से कभी कहूँ ।

जमीला—खफ़ा हो गईं। तौबा है अल्लाह। जरा-जरा सी बात पर खफा होती हो तुम तो।

मेम साहब—तुम बात ही ऐसी करती हो। कैसा मैने लिखकर कहा था कि सिनेमा चलो। मगर तुमको हमेशा उसी वक्त नखरे सूझते हैं जब मैं खुशामद करूँ। आज से कभी जो कहूँ। भरपाया, कान पकड़े।

जमीला—अरे मेरी बन्नो! अच्छा अब हँस दो नहीं तो मैं गुद-गुदाती हूँ। चलो मैं चलती हूँ।

मेम साहब—मुआ दिल जला के रख दिया, अब चली हैं वहाँ से लल्लो-पत्तो करने।

जमीला—अच्छा अब चुप भी रहो, नहीं तो फिर मैं उठती हूँ। लो और सुनो, बिचारी ऐंठ ही के रह गई। उठो अब वह दोनों आ रहे हैं।

मेम साहब—आइये, आइये। आप दोनों चलिये मोटर पर हम दोनों भी आ रहे है।

जमीला—तो चलो साथ ही क्यों नहीं चलतीं? घर वाले के साथ जाते हुए शर्म आती है।

मेम साहब—ऐ जनाब मैंने कहा सुनते हैं आप, यह टाई बुर्के के अन्दर कर लीजिये तो अच्छा है।

जमीला—और आप भी जरा मूँछों को बाहर न रखें तो अच्छा है वैसे मैं आपकी कनीज हूँ।

मेम साहब—इन दोनों को मर्दाने दर्जे में बैठाओगी या साथ?

जमीला—मैं मर्दाने दर्जे की क़ायल नहीं हूँ। माले-अरब पेश अरब…।

मेम साहब—अच्छा बैठो तुम इधर बाहर की सीट पर आ जाओ। देखो रहीमन पर्दा दुरुस्त करो उड़ रहा है।

[मोटर के चलने की आवाज। फिर सड़क पर शोर-गुल।

मोटर आकर सिनेमा के पास रुकती है ।]

जमीला—मैं टिकट लिए लेती हूँ, तुम ज़रा इन सवारियों के पास ही रहना ।

मेम साहब—तमाशा देर हुए शुरू हो चुका है, जल्दी से टिकट ले लो ।

जमीला—अभी लाई । [जाती है ।]

मेम साहब—ओ साहब कोट का दामन तो अन्दर कर लीजिये बुर्क़े के । ऐनक तो यों ही चमक रही है । और ज़रा इनसे भी कहिये अपने दोस्त से कि टाई छिपायें ।

पुरुष—[चुपके से] हवा के मारे बुर्क़ा ही क़ाबू में नहीं है ।

मेम साहब—अच्छा ख़ैर, अब यहाँ सैकड़ों औरतों में ज़बान ही न खोलिये । ज़रा देर चुप रहने में कोई हर्ज नहीं है । नोज बीबी न किसी की शर्म न हया । इन मर्दों के दीदों का पानी तो जैसे सचमुच मर गया है । हवाई दीदा हैं आजकल के मर्दुवे । [जमीला आती है ।]

जमीला—चलो, जल्दी चलो बहुत कुछ तमाशा हो चुका है । [सब जाते हैं ।]

[धीरे-धीरे किसी फ़िल्मी गाने की आवाज़ क़रीब आती है जो देर तक होता रहता है । उसी के दरम्यान मेम साहब कहती हैं ।]

मेम साहब—जमीला, ज़रा इन साहबज़ादी को देखना जब से हम लोग आये हैं इनकी नज़रें इन बुर्क़ों पर जैसे जम कर रह गई हैं ।

जमीला—ऊँह, होगा भी । तुम तमाशा देखो ।

मेम साहब—और इस औरत को तो देखो वह भी इसी तरफ़ देख रही है । जी चाहता है कि दीदे फोड़ दें कम्बख़्त के ।

जमीला—तुम को आख़िर इसकी कौनसी फ़िक्र है ? देख रही है तो देखने दो ।

मेम साहब—नहीं मैं पूछती हूँ कि ये तमाशा देखने आती हैं कि

शरीफ़ घरानों के पर्दादार मर्दों को घूरने आती हैं। जैसे इन कम्बख़्तों के तो बाप-भाई हैं ही नहीं।

जमीला—तौबा है! यह तुम तमाशा देख रही हो कि इसी फ़िक्र में हो?

मेम साहब—ऐ लो, इण्टरवल हो गया।

जमीला—ऐ है, ज़रा देखना तुम्हें मेरी क़सम ये कौन बेगम साहब हैं जो अपने मर्दुए को मारे फ़ैशन के बिल्कुल बे-पर्दा लाई हैं।

मेम साहब—और सूरत देखो मर्दुए की जैसे मुआ डाकू। ऐसी सूरत को तो कभी बे-पर्दा न करे।

जमीला—न सूरत न शकल भाड़ में से निकल। नौज बीवी ऐसा भी क्या मुआ फ़ैशन कि घर के मर्दों का पर्दा उड़ा दिया जाय।

मेम साहब—ऐ पर्दा तो अब उठता ही जाता है। कुछ दिनों में सभी मर्दुए सड़कों पर निकल पड़ेंगे।

जमीला—नौज सड़कों पर निकल पड़ें। अल्लाह न करे हमारी तुम्हारी जिन्दगी में ऐसा हो।

[सिनेमा की घण्टी बजती है कि इतने में कुछ मर्दों के लड़ने की आवाज़ आती है।]

मेम साहब—लो और सुनो, मर्दाने दर्जे में लड़ाई हो गई।

जमीला—इसीलिए तो मैं मर्दों को साथ बिठाना अच्छा समझती हूँ। भला यह भी कोई शरीफ़ बेटों-दामादों का काम है कि वह इस तरह बंकार-बंकार कर लड़ें?

[लड़ाई की आवाज़ तेज हो जाती है।]

नम्बर १—तू क्या समझा है अपने को?

नम्बर २—और तू क्या समझता है अपने आपको?

नम्बर १—बुलाऊँ मैं अपने यहाँ की औरतों को?

नम्बर २—अरे तो मैं भी अकेला नहीं हूँ। मेरे यहाँ की औरतें भी हैं।

नम्बर १—तो तुम इस जगह् से नहीं हटोगे ?

नम्बर २—क़यामत तक नहीं हटेंगे। और अगर हिम्मत हो तो हटाकर देखलो।

नम्बर १—अच्छा हट तो सही यहाँ से।

नम्बर २—ख़बरदार जो हाथ लगाया मेरे।

नम्बर १—अबे हाथ के बच्चे ले।

नम्बर २—हट उधर। [एक आम शोरो-गुल के अन्दर मेम साहब की आवाज नुमायाँ होती है।]

मेम साहब—ऐ हैं, अब क्या पड़े हुए सोया ही करोगे। दफ़्तर जाना नहीं है ?

पुरुष—[नींद से होश्यार होते हुए] ऐं ?···ऊँह···आख़ा !

मेम साहब—तुम तो कहते थे आज दफ़्तर में मुआयना है। और धूप चढ़ आई है अब तक पड़े ऐंठ रहे हो।

पुरुष—उफ़ ओह !···वाक़ई देर होगई···। दाढ़ी का पानी, शेव का सामान। [घण्टा नौ बजाता है।] अरे यह तो नौ बज गये। लाहौल वला कूवत। आख़िर जगाया क्यों न गया अब तक ? अब जल्दी करो। मैं अभी तैयार होता हूँ, जल्दी करो, जल्दी करो।

[जाता है।]